International Journal of Advanced Education and Research
ISSN: 2455-5746
Impact Factor: RJIF 5.34
www.alleducationjournal.com
Volume 3; Issue 3; May 2018; Page No. 28-30

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शालेय वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

डॉ० पी० के० नायक [1], प्रियंका मरकाम [2]

[1] प्रोफेसर एवं डीन विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय, करगी रोड कोटा बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

[2] एम.फिल शोधार्थी, शिक्षा–शास्त्र, डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय, करगी रोड कोटा बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

सारांश

शालेय वातावरण शैक्षिक उपलब्धि का आधार होता है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सबसे अधिक उसके शालेय वातावरण से प्रभावित होती है, अतः शिक्षकों का कर्तव्य है कि वे शाला में विद्यार्थियों के लिए ऐसे वातावरण का निर्माण करे कि विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो। शिक्षकों को चाहिए कि वह अपने विद्यार्थियों चाहे वह लड़के हो या फिर लड़कियां दोनों को समान व्यवहार समान वातावरण एवं समान अवसर उपलब्ध कराये। शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों को सुरक्षित प्रेमपूर्ण विश्वस्त और सहयोगीपूर्ण शाला वातावरण प्रदान करना चाहिए जिससे कि उनमे अपने शिक्षकों मित्रों परिवारिक सदस्यों एवं शाला वातारण के प्रति समायोजन की भावना पनपे। शोधकर्ता द्वारा अपने शोध में ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के शालेय वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

मूल शब्द : शालेय वातावरण, शैक्षिक उपलब्धि, विद्यार्थियों, सर्वांगीण विकास।

प्रस्तावना

शिक्षा का औपचारिक साधन विद्यालय है विद्यालय से संस्कार, संस्कार से मनुष्य मनुष्य सामाजिक विकास होता है। प्रत्येक राष्ट्र अथवा समाज की अपनी ऐतिहासिक, भौगोलिक, सामाजिक, राजनीतिक, और आर्थिक, स्थिति परिस्थिति एवं समस्याएं होती है। परंपराएं होती है, आदर्श एवं संस्कृति होती है। और इन्हीं के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था होती है ताकि वह इन सब का आने वाली पीढ़ी को हस्तांतरण कर सके हस्तांतरण के लिए विद्यालय सर्वोत्तम साधन है विद्यालय में प्रधानाध्यापक एवं अध्यापक की सहयोगी प्रवृत्ति इस कार्य को संपन्न कराने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में अर्जित उपलब्धि शैक्षिक उपलब्धि के नाम से जाना जाता है जिसमें निर्धारित पाठ्यक्रम होता है समान मानसिक योग्यता ना होने पर यह किताब में सीमाओं के कारण बालक अलग–अलग मायने में शैक्षणिक प्रगति करता है इस प्रगति व ज्ञान प्राप्ति को शैक्षणिक उपलब्धि कहा जाता है जिसके द्वारा शिक्षा का मूल्यांकन होता है। मूल्यांकन को परिभाषित करते हुए थार्नडाइक महोदय ने लिखा है जिस वस्तु का भी अस्तित्व है उसका किसी ना किसी मात्रा में अस्तित्व होता है और जो कुछ मात्रा में है उसे मापा जा सकता है। उत्तम शैक्षणिक उपलब्धि तथा आत्म प्रत्यय शिक्षक और सहपाठियों से संबंधित होते हैं।

अध्ययन का औचित्य

विद्यालय का वातावरण ही विद्यार्थियों के अधिगम का अत्यंत प्रमुख साधन होता है। कक्षा उपलब्धि परीक्षण विद्यार्थियों के लिए विशय विशेशज्ञता का पता लगने सहायक होगा। शालेय वातावरण का स्तर जितना श्रेष्ठ होगा विशयगत शिक्षण सुधार में उतना ही अधिक उपयोगी होगा। विद्यालय प्रांगण में वे सभी आवश्यक संसाधन निहित होने चाहिए जिससे विद्यार्थियों को अनुकूल वातावरण, पठन–पाठन के लिये मिल सकें। अनुकूल वातावरण मिलने पर ही विद्यार्थी अपने आप को उस विद्यालय के दिशा निर्देशों के अनुकुल ढाल पाता है तथा अपने अधिगम को उच्चकोटी तक ले जाने में समर्थ हो जाता है।

अतः शैक्षिक उपलब्धि एवं शाला वातावरण का विद्यार्थियों से सीधा संबंध होता है। जो कि शोधार्थी के रूचि का विशय है। इसलिये शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत लघुशोध के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि आधुनिक युग की आवश्यकता के अनुसार विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में शाला वातावरण का क्या योगदान है? क्या सभी शिक्षक अपने विद्यार्थियों की शिक्षा पर यथोचित सहयोग देने में सफल है? क्या शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में अन्तर है? क्या शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शाला वातावरण में अंतर है। इसी समस्या के समाधान के लिए इस लघुशोध की आवश्यकता महसूस की गई।

समस्या कथनः ''उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शालेय वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन''

प्रयुक्त पदों की क्रियात्मक परिभाषा

- **शालेय वातावरण** – शालेय वातावरण वह तत्व है जो बालको में सीखने की प्रक्रिया वर्ग या कक्षा की भौतिक वातावरण को प्रभावित करता है। भौतिक वातावरण का अर्थ है विद्यालय का भवन, रोशनी की व्यवस्था, वायु–आगमन का प्रबंध, खेल के मैदान की व्यवस्था, टेबल–कुर्सी की व्यवस्था, शोरगुल का नियंत्रण इत्यादि।
- **शैक्षिक उपलब्धि** – पी. डी. पाठक के अनुसार :– उपलब्धि परीक्षण वे परीक्षाएं हैं जिनकी सहायता से विद्यालय में पढ़ाये जाने वाले विषयों और दिखाई जाने वाली कुशलताओं में छात्रों की सफलता या उपलब्धि का ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के शालेय वातावरण का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

3. उच्च एवं मध्य शालेय वातावरण का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
4. उच्च एवं निम्नतम् शालेय वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
5. मध्यम एवं निम्नतम् शालेय वातावरण का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं

H_{01}: ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के शालेय वातावरण में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

H_{02}: ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

H_{03}: उच्च एवं मध्य शालेय वातावरण का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

H_{04}: उच्च एवं निम्नतम शालेय वातावरण का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

H_{05}: मध्यम एवं निम्नतम शालेय वातावरण का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

अध्ययन का परिसीमन

शोध समस्या का शीर्षक ''उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शालेय वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन'' करना है।

शोध हेतु कांकेर जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र को अध्ययन हेतु परिसीमित किया गया है। जिसमें कक्षा 9वीं के विद्यार्थियों को लिया गया है एवं 14 वर्ष से 16 वर्ष तक की आयु सीमा तक सीमित किया गया है।

शोध विधि

इस अध्ययन को पूरा करने के लिए शोध में ''सर्वेक्षण विधि'' का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में कांकेर जिले के कक्षा 9वीं में से 120 अध्ययनरत् विद्यार्थियों का चयन किया गया है जिसमें 60 छात्र एवं 60 छात्राएं हैं।

प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत लघुशोध हेतु शोधार्थी द्वारा के.एस. मिश्रा द्वारा निर्मित (SEI-M) शाला वातावरण का प्रयोग किया गया एवं शैक्षिक उपलब्धि मापनी (C.A.T) के लिए डॉ. पी.के. नायक द्वारा निर्मित प्रश्नावली को प्रयोग में लिया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकी विधि : प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकी विधियॉ माध्य, माध्यमान, प्रमाणिक विचलन, प्रमाणिक त्रुटि, टी–मूल्य परीक्षण, स्वतंत्र कोटि द्वारा किया गया है।

निष्कर्ष

H_{01}: ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के शालेय वातावरण में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

तालिका 1

S. No.	परिवेश	N	M	SD	S_{ED}	t-test Value	सारणीगत मान (118)	परिणाम
1.	ग्रामीण	60	162.5	13.11	2.5	0.46	0.05 = 1.98	स्वीकृति
2.	शहरी	60	163.66	14.28			0.01 = 2.62	

निष्कर्ष

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के शालेय वातावरण में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः हमारी परिकल्पना स्वीकृत होती है।

H_{02} ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

तालिका 2

S. No.	परिवेश	N	M	SD	S_{ED}	t-test Value	सारणीगत मान (118)	परिणाम
1.	ग्रामीण	60	52.3	16.85	3.0	0.27	0.05 = 1.98	स्वीकृति
2.	शहरी	60	60.03	16.03			0.01 = 2.62	

निष्कर्ष

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अतः हमारी परिकल्पना स्वीकृत होती है।

H_{03} उच्च एवं मध्य शालेय वातावरण का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

तालिका 3

S. No.	समूह	N	M	SD	S_{ED}	t-test Value	सारणीगत मान (८७)	परिणाम
1.	उच्च शाला वातावरण	33	77.3	7.96	2.13	13.22	0.05 = 1.99	अस्वीकृति
2.	मध्यम शाला वातावरण	56	49.14	12.2			0.01 = 2.63	

निष्कर्ष

उच्च एवं मध्य शालेय वातावरण का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पाया गया। अतः हमारी परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

H_{04} उच्च एवं निम्नतम शालेय वातावरण का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

तालिका 4

S. No.	समूह	N	M	SD	S_{ED}	t-test Value	सारणीगत मान (62)	परिणाम
1.	उच्च शाला वातावरण	33	77.3	7.96	2.12	17.56	0.05 = 2.00	अस्वीकृति
2.	निम्न शाला वातावरण	31	40.03	8.95			0.01 = 2.66	

निष्कर्ष

उच्च एवं निम्नतम शालेय वातावरण का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पाया गया। अतः हमारी परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

H_{05} मध्यम एवं निम्नतम शालेय वातावरण का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

तालिका 5

S. No.	समूह	N	M	SD	S_{ED}	t-test Value	सारणीगत मान (62)	परिणाम
1.	उच्च शाला वातावरण	55	49.14	12.2	2.28	3.97	0.05 = 1.99	अस्वीकृति
2.	निम्न शाला वातावरण	31	40.07	8.95			0.01 = 2.63	

निष्कर्ष

माध्यम एवं निम्नतम शालेय वातावरण का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर समर्थक प्रभाव पाया गया अतः हमारी परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

शैक्षिक महत्व

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सबसे अधिक उसके शालेय वातावरण द्वारा प्रभावित होती है अतः शिक्षकों, प्रधानाचार्य एवं प्रशासन का कर्तव्य बनता है कि वे कक्षा प्रबंधन, शाला प्रबंधन, शिक्षा प्रबंधन, एक्स्ट्रा करीकुलम एक्टीवीटी, खेल, शिक्षण सामग्री, पाठ्यक्रम इत्यादि पर ध्यान प्रदान करे ताकि बच्चों का सर्वांगीण विकास संभव हो सके।

सुझाव

1. शिक्षकों को चाहिए कि वे अपने शालेय वातावरण को व्यवस्थित रखें।
2. शिक्षकों का यह दायित्व बनता है कि छात्रों के शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावशाली बनाने के लिए शाला वातावरण को अधुनिकतम एवं विकासशील बनाने का प्रयत्न करें।
3. शिक्षकों को विद्यार्थियों की शाला वातावरण में समंजस्य स्थापित करने में सहायता करें।
4. शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के शाला वातावरण की मानसिकता को दूर किया जाना चाहिए।
5. अभिभावकों में शहरी एवं ग्रामीण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के भ्रम को दुर करना चाहिए।

उपसंहार

अनेक मनोवैज्ञानिकों के सिध्दांतो के अनुसार बालक के शैक्षिक उपलब्धि के विकास पर अनुवांशिकता और वातावरण दोनों का प्रभाव पड़ता है परंतु बालक के बुद्धि के विकास पर अनुवांशिकता से कहीं अधिक प्रभाव वातावरण का पड़ता है। विद्यालय के वातावरण का बालक के व्यक्तित्व के विकास पर प्रत्यक्ष रुप से अपेक्षाकृत अधिक प्रभाव पड़ता है। यदि बच्चों को विद्यालय में अनुकूल वातावरण प्राप्त होता है तो वे सही दिशा में प्रगति कर सकते हैं। विचारणीय है कि विद्यालय का वातावरण बालक के शैक्षिक उपलब्धि को इस सीमा तक प्रभावित करता है कि योग्य और होनहार बालक विद्यालय के अनुपयुक्त वातावरण के कारण समुचित विकास से वंचित हो जाते हैं। विद्यालय का अच्छा वातावरण बालक के लिए सीखने की अनुकुल स्थितियां उपलब्ध कराता है। विद्यालय का वातावरण ऐसा कारक है जो बच्चों को प्रभावित करता है और उसके शैक्षिक विकास में परिवर्तन लाता है। बच्चों के भविष्य की नीवं धर एवं विद्यालय में रखी जाती है। विद्यालय में शिक्षक द्वारा उसे अनुकूल बनाकर उस पर विकास का भवन निर्मित किया जाता है। शाला वातावरण को संवारने में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विद्यालय में शिक्षक का बच्चों के प्रति व्यवहार स्वयं का व्यक्तित्व एवं चरित्र ऐसी कई बातें हैं जो बालक के शैक्षिक विकास को प्रभावित करती है। विद्यालय का संगठनात्मक तंत्र इस ढंग से सुव्यवस्थित होना चाहिए कि छात्रा–छात्राओं में स्वानुशासन की प्रवृत्ति सहजरुप से विकसित हो विद्यालय को उत्तम स्वरूप देने के लिए विद्यालय में भौतिक, शैक्षिक, सामाजिक सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक वातावरण का निर्माण करना आवश्यक है। जिससे बच्चे विद्यालय की ओर आकृष्ट हो और सीखने में उन को प्रेरणा मिले।

संदर्भ

1. शर्मा. डॉ. आर. ए. (2001), शिक्षा अनुसधान, लाल बुक डिपो मेरठ।
2. कपिल. एच. के. (1975) सांख्यिकार्य के मूलतत्व विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
3. पचौरी. डॉ. गिरीश (2014), शिक्षा का सामाजिक आधार लायन बुक डिपो मेरठ।
4. पाटक. डी. पी. (1996), शैक्षिक मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
5. श्रीवास्तव डॉ. अनिल कुमार गुप्ता रेनु (2016) महाराजा बृज वि. वि. भरतपुर राजस्थान शिक्षित–अशिक्षित परिवारों का विद्यार्थियों के समायोजन व शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव।
6. अवस्थी, डॉ. दिलीप कुमार (2010) कर्नल ईश्वरी सिंह इंटरमीडिएट कॉलेज जालौना– बच्चों के व्यक्तित्व विकास में विद्यालय वातावरण का प्रभाव।